कर्मबंधन के 12 गुह्य सूत्र

➢➢ आसक्ति / Attachment

➳ _ ➳ जितना आसक्त होकर कर्म किये जाते हैं..

→ उतना ही उसमें बंधन ज्यादा होते हैं...

- अगर भाषण देने की सेवा से हटाकर किचन की सेवा दे दी जाए
  - तो मन में Disturbance नहीं होनी चाहिए
- हलके होकर, निस्वार्थ, निष्काम भाव से सेवा की
  - और फिर वहाँ से निकल कर आ गए
  - फिर उसके बाद किसी से कोई लेना देना नहीं

➢➢ अपेक्षाएं / Expectations

➳ _ ➳ सेवा के बदले कुछ भी उम्मीद न रखें

→ कोई तारीफ नहीं

→ कोई स्तुति नहीं

→ कोई Recognisation नहीं

→ कोई सौगात नहीं

→ कोई फूल नहीं

→ कोई Hospitality नही

➢➢ अज्ञान

➳ _ ➳ श्रीमत के पूरे ज्ञान के बिना

➳ _ ➳ त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हए बिना

➳ _ ➳ कर्मों की गुह्य गति को बुधी में न रखना

➳ _ ➳ विस्मृति की अवस्था

➳ _ ➳ स्वमान में स्थित हुए बिना

➳ _ ➳ बाप की याद के बिना

➢➢ असंयम / उतावलापन / बेचैनी / जल्दबाजी / Anxiety

➳ _ ➳ बिना संयम के खाना पीना

➳ _ ➳ बिना संयम के खेल कूद करना

➳ _ ➳ बिना संयम के बोलना

➳ _ ➳ No Self Control

➳ _ ➳ कोई आत्म निगरानी नहीं

➢➢ आदतें

➳ _ ➳ आदतें अपने आप काम करती हैं

➳ _ ➳ ऐसी गलत आदतें

→ जिससे कर्म बंधन खुद ब खुद बन जाते हैं

➳ _ ➳ नयी आदतें अपनाएं

➢➢ आलस्य / Laziness / Carelessness

➳ _ ➳ कोई उमंग उत्साह नहीं रहता

➳ _ ➳ कोई Passion नहीं

➳ _ ➳ Life में Dullness

➢➢ वासना / लालच Greed

➳ _ ➳ वासना और लालच के आधीन होकर किया गया हर कर्म बंधन बनाता है

➢➢ स्वार्थ

➳ _ ➳ स्वार्थ भाव से किया गया हर कर्म बंधन बनाता है

➢➢ नकारतमकता / Negativity

➳ _ ➳ Negative विचारों से किया गया कर्म बंधन बन जाता है

➢➢ भय / Fear

➳ _ ➳ भय से युक्त कोई भी कर्म बंधन बन जाता है

➢➢ नाम / मान / शान की इच्छा

➳ _ ➳ दिखावे के लिए किया गया कर्म बंधन बनाता है